10

भारत में संस्कृति और धरोहर – II: सिख, इस्लाम और ईसाई धर्म

भारत में धर्म के संदर्भ में वैविध्य पाया जाता हैं– हिंदू, इस्लाम, सिख, जैन, बौद्ध और ईसाई धर्म। लोग अपने-अपने धर्म और संस्कृति का अनुसरण करते हैं तथा ईश्वर की पूजा अपने-अपने ढंग से करते हैं।

धर्म और अध्यात्म की यह संपदा पूरे देश में देखी और महसूस की जा सकती है। इसलिए यहाँ बहुत-सी यात्राएँ धर्म से जुड़ी होती हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि भारत में लोग अपने सांसारिक जीवन और अगले जन्म को अच्छा बनाने के लिए अपने इष्ट से संवाद में लगे रहते हैं।

इसलिए यहाँ अनगिनत मंदिर, मस्ज़िद, गुरुद्वारा, चर्च और तीर्थ-स्थलों का पाया जाना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है, जहाँ पर लोग महत्वपूर्ण अवसरों पर जाते हैं। ऐसा इसलिए है कि धर्म मानव जाति के लिए सर्वव्यापक एवं नैसर्गिक आकर्षण है और लोग विशेष रूप से अपने धर्म से जुड़े रहते हैं। इस पाठ में हम आपको यह जानकारी देंगे कि किस प्रकार पर्यटन उद्योग में धार्मिक स्थलों का उपयोग तीर्थयात्रा के लिए किया जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- सिख धर्म और इसकी मूल शिक्षाओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- सिख तीर्थस्थलों के प्रमुख केंद्रों की सूची बना सकेंगे;
- इस्लाम और इसकी मूल शिक्षाओं पर चर्चा कर सकेंगे;
- प्रमुख मुस्लिम धार्मिक पर्यटन स्थलों; जैसे - सूफ़ी दरगाहों की सूची बना पाएँगे;
- ईसाई धर्म और इसकी मूल शिक्षाओं का वर्णन कर पाएँगे;
- प्रमुख ईसाई चर्चों को पर्यटकों के आर्कषण-केंद्रों के रूप में सूचीबद्ध कर पाएँगे।

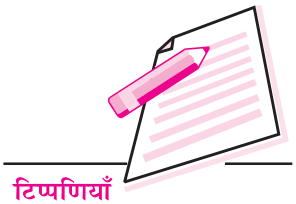

10.1 सिख धर्म और इसकी मूल शिक्षाएँ

सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक का जन्म 1469 में पाकिस्तान में लाहौर के निकट तलवंडी में हुआ था। वे भक्ति आंदोलन के महानतम संतो में से एक थे। 'सिख' शब्द की व्युत्पति संस्कृत के 'शिष्य' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है 'अनुयायी'।

सिख अपने दस गुरुओं के अनुयायी हैं। गुरु नानक (1469-1539) इनके प्रथम और गुरु गोविंद सिंह (1666-1708) अंतिम गुरु थे। गुरु नानक ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत और फ़ारसी में प्राप्त की थी।

1496 में उन्हें असाधारण आध्यात्मिक अनुभव (ज्ञानोदय) हुआ। जिसके बाद उन्होंने प्यार और भाईचारे के संदेश को प्रसारित करने के लिए बड़े पैमाने पर यात्राएँ कीं। मुस्लिम संगीतकार मरदानाजी और हिंदू किसान भाई बाला उनके साथ थे। ये तीनों उपदेश देने के लिए गाँव-गाँव गए। गुरु नानक कीर्तनों, भजनों और रागों के माध्यम से उपदेश देते थे और उन्हें सुनने के लिए लोगों की भीड़ एकत्रित हो जाती थी। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष अपने परिवार के साथ करतार पुर गाँव में बिताए। उनके भजनों और गीतों को एक पुस्तक में संकलित किया गया था जिसका नाम 'आदि ग्रंथ' है। उन्होंने 'संगत' (लोगों का एक साथ बैठकर गुरु को सुनना) और 'पंगत' (लोगों का एक साथ बैठकर लंगर या नि:शुल्क भोजन करना) की स्थापना की।

? क्या आप जानते हैं

गुरु नानक का जन्म स्थान ननकाना साहिब के नाम से प्रसिद्ध है। गुरु नानक के नाम पर इसका नाम बदल कर ननकाना रखा गया। यहाँ पर स्थित कई धार्मिक स्थल गुरु नानक के बचपन और किशोरावस्था की स्मृति को समर्पित हैं। अपने निधन के कुछ दिन पहले, उन्होंने अपने अनुयायियों की एक सभा बुलाई और अपने शिष्य अंगद को अपना उत्तराधिकारी चुना। गुरु अंगद ने 'आदि ग्रंथ' का संकलन किया। क्रम में अन्य गुरु थे – गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरगोविंद, गुरु हर राय, गुरु हरकिशन, गुरु तेग बहादुर और गुरु गोविंद सिंह। अंतिम गुरु ने सिखों को अनुशासित और खालसा कहलाई जाने वाली फौज के रूप में संगठित किया। उन्होंने सिख धर्म के पाँच चिह्न स्थापित किए – कंघा, केश (लंबे बाल) कड़ा (लोहे का कंगन) कच्छा (जांघिया) और कृपाण (तलवार या कटार)।

गुरु नानक की शिक्षाएँ

- ईश्वर एक है।
- ईश्वर निराकार है, हरि और गोविंद।
- जातिप्रथा और मूर्तिपूजा का खंडन करना चाहिए।
- अंधविश्वासों की निंदा होनी चाहिए।
- विनम्रता, दान, क्षमा, दया और सच्चाई के गुणों का संचार होना चाहिए।

क्या आप जानते हैं

गुरुद्वारा दमदमा साहिब, 'अस्थायी प्राधिकरण की गद्दी' वास्तव में सिखों के पूजनीय तख़्तों में से एक है। यह वह स्थान है जहाँ सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह भीषण राजनीतिक संकट के कारण कुछ समय के लिए ठहरे थे और उस समय उन्होंने शांत चित्त के साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में महत्वपूर्ण छंद जोड़ने का काम किया।

10.2 सिखों के सर्वाधिक पवित्र तीर्थस्थल और धरोहर

10.2.1 तख़्त

सिखों के पूजा स्थलों को 'तख़्त' के नाम से जाना जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'दिव्य शक्ति की गद्दी' और गुरुद्वारा का अर्थ है- 'गुरु का द्वार'। भारत में कई गुरुद्वारे हैं, परन्तु तख़्त केवल पाँच हैं। कुछ महत्वपूर्ण गुरुद्वारों और तख़्तों में स्वर्ण मंदिर, गुरुद्वारा रकाब गंज, श्री अकाल तख़्त, श्री पटना साहिब, श्री हजूर साहिब आदि सम्मिलित हैं। सिख धर्म के अनुयायी इन स्थानों पर पवित्र पुस्तक 'गुरु ग्रंथ साहिब' का आशीर्वाद प्राप्त करने आते हैं जो सिखों का आध्यात्मिक ग्रंथ है।

ऐसा कहा जाता है कि 'तख़्त' वे स्थान हैं जहाँ गुरुओं द्वारा अनेक सामाजिक और राजनीतिक समाधान किए जाते थे। पाँच तख़्तों में शामिल हैं-

1. गुरु हरगोबिंद सिंह द्वारा स्थापित श्री अकाल तख़्त।
2. तख़्त श्री केशगढ़ साहिब जहाँ खालसा पंथ का आरंभ हुआ।
3. तख़्त श्री दमदमा साहिब जहाँ गुरु गोविंद सिंह द्वारा 'गुरु ग्रंथ साहिब' का पूर्ण संस्करण लिखा गया था।
4. तख़्त श्री हजूर साहिब जहाँ गुरु गोविंद सिंह ने अपनी अंतिम साँस ली।
5. गंगा नदी के किनारे स्थित तख़्त श्री पटना साहिब।

सिखों के पंच तख़्तों में से एक तख़्त सचखंड श्री हजूर अबचलनगर साहिब, गोदावरी नदी के तट पर महाराष्ट्र के पवित्र नगर नांदेड़ में स्थित है।

10.2.2 गुरुद्वारा

तख़्तों के अलावा, भारत में कई गुरुद्वारे भी हैं जो ऐतिहासिक रूप से सिख तीर्थ स्थलों से संबंधित हैं इसलिए ये तीर्थ यात्रा के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। लाखों लोग विशेष रूप से सिख गुरुओं का स्मरण करने के लिए गुरुद्वारे जाते हैं। अत्यधिक प्रसिद्ध इमारतों में से पंजाब के अमृतसर में स्वर्ण मंदिर, दिल्ली में बंगला साहिब अत्यधिक विशिष्ट हैं। अमृतसर के स्वर्ण मंदिर गुरुद्वारे के शीर्ष पर सुसज्जित सोने के पानी चढ़े गुंबद के कारण इसे स्वर्ण मंदिर कहा जाता है। भारत की अत्यधिक प्रभावशाली और मनोहर इमारतों में से दिल्ली का बंगला साहिब गुरुद्वारा भी सिख धर्म

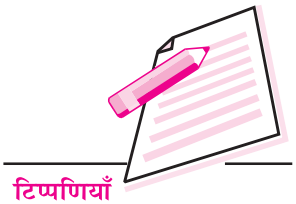

के इतिहास से गहराई से जुड़ा हुआ है। यहाँ हम भारत में सिखों के कुछ और तीर्थ स्थलों के बारे में भी पढ़ेंगे जिनके बारे में आपको ज्ञान होना चाहिए। यह आपके लिए ज्ञानवर्धक होगा।

गुरुद्वारा पाओंटा साहिब जो गुरु गोविंद सिंह जी को समर्पित है। यह हिमाचल के सिरमोर में पाओंटा साहिब शहर में स्थित है। इस परम पूजनीय स्थल पर बड़ी मात्रा में श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है। इसका स्थान का नाम पाओंता अर्थात 'पैर' है जो इस स्थान के महत्व को बखूबी दर्शाता है।

गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब सिखों के परम पूजनीय स्थलों में से एक है, जिसे सिखों के नौंवे गुरु, गुरु तेग बहादुर को श्रद्धांजलि देने के लिए बनवाया गया था।

गुरुद्वारा शीशगंज साहिब का निर्माण पुरानी दिल्ली के चाँदनी चौक क्षेत्र में हुआ था। यहाँ 24 नवम्बर 1675, बुधवार के दिन मुग़ल बादशाह औरंगजेब के आदेश पर सिखों के नौवें गुरु तेग बहादुर को यातनाएँ दी गई थीं। इस शहीदी की याद में गुरुद्वारे का निर्माण हुआ और यह शीशगंज साहिब के नाम से जाना जाने लगा।

हेमकुंड साहिब दुनिया के प्रमुख सिख तीर्थ स्थलों में से एक है। यह प्रसिद्ध तीर्थ स्थल समुद्र तल से 15200 फीट की ऊँचाई पर जिला चमोली, उत्तराखंड, भारत में स्थित है। यहाँ गोविंद घाट से पैदल पहुँचा जा सकता है। यह एक प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल है, इस दुर्गम स्थल तक पहुँचने के लिए लोग ऊँचे और बुलंद हिमालयं की यात्रा करते हैं।

पटना साहिब गुरुद्वारा सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह को समर्पित है। यह गंगा किनारे स्थित है। होली के दौरान मार्च में यह गुरुद्वारा असंख्य श्रद्धालुओ से भर जाता है। इस स्थान पर असंख्य श्रद्धालु यात्रा पर आते हैं।

अमृतसर का स्वर्ण मंदिर सिखों का अत्यधिक पवित्र स्थल माना जाता है। इस नगर की स्थापना 1577 में सिखों के चौथे गुरु, गुरु रामदास ने अकबर द्वारा उपहार में दी गई भूमि पर की थी। पाँचवे गुरु अर्जुन देव ने गुरुद्वारे को पूर्ण करवाया। जब महाराजा रणजीत सिंह ने गुरुद्वारे के ऊपरी आधे भाग पर पहले ताँबे और फिर शुद्ध सोने का पानी चढ़वाया तबसे इसको स्वर्ण मंदिर के नाम से जाना जाने लगा।

चित्र 10.1: अमृतसर का स्वर्ण मंदिर

आनंदपुर साहिब भी एक महत्वपूर्ण गुरुद्वारा है। देश के सभी भागों से सिख इस गुरुद्वारे में दर्शन करने के लिए आते हैं। हर वर्ष होली के समय यहाँ होला मोहल्ला मेला लगता है।

अन्य महत्वपूर्ण गुरुद्वारे हैं–कीरतपुर साहिब, डेरा बाबा नानक, पटना साहिब, तरन तारन पर स्थित दरबार साहिब आदि।

पाठगत प्रश्न 10.1

1. सिखों के दस गुरुओं के नाम लिखिए।
2. 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' सिख धर्म से किस तरह संबंधित है?
3. तख़्त क्या हैं?
4. उन पाँच 'क' का वर्णन कीजिए जिन्हें सिख पुरुषों के लिए धारण करना आवश्यक माना गया है।
5. 'लंगर' की अवधारणा का वर्णन कीजिए।

क्रियाकलाप 10.1

भारत के मानचित्र में सिख धरोहर-स्थलों की पहचान कीजिए।

किसी गुरुद्वारे के दर्शन कीजिए और सिखों की धार्मिक गतिविधियों का अवलोकन कीजिए।

10.3 इस्लाम और इसकी मूल शिक्षाएँ

इस्लाम एकेश्वरवादी धर्म है। इस्लाम का शाब्दिक अर्थ है 'शांति और समर्पण'। धर्म के रूप में इस्लाम को हज़रत मोहम्मद द्वारा मक्का में सन् 570 में स्थापित किया गया था।

610 ईसवी में 40 वर्ष की उम्र में हज़रत मोहम्मद को पैग़ंबर (ईश्वर का संदेश लाने वाला) पद प्राप्त हुआ। पैग़ंबर मोहम्मद उस युग में जी रहे थे जब अरब के हर स्थान पर मूर्ति पूजा होती थी। उन्होंने मूर्ति पूजा का विरोध किया। अरब के लोगों ने उन्हें बहुत सताया। हज़रत मोहम्मद और उनके विरोधियों के बीच मूर्तिपूजा को लेकर 13 वर्षों तक विवाद चलता रहा। यहाँ उनको पहला इलहाम अर्थात दिव्य रहस्योद्घाटन हुआ। यह मानवता के लिए खुदा द्वारा दिखाया गया मार्ग है। लेकिन 622 ईसवीं में परिस्थितियों वश उन्हें मक्का से मदीना में प्रवास करना पड़ा। उनके प्रवास को 'हिज़रत' कहते हैं। इस घटना के बाद से हिज़री युग शुरु होता है। 632 ईसवीं में पैगंबर मोहम्मद का निधन हो गया।

नीचे दिए गए क्रम के अनुसार चार सबसे प्रख्यात साथी पैगंबर बने :

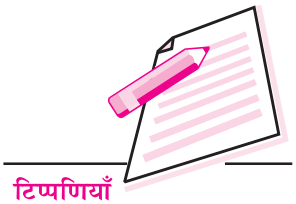

- हज़रत अबु बकर
- हज़रत उमर
- हज़रत उसमान
- हज़रत अली

मुसलमान प्रतिदिन पाँच बार मक्का की ओर मुख करके प्रार्थना करते हैं। एक मुआज़्ज़िन या व्यक्ति लोगों को मस्ज़िद में प्रार्थना करने के लिए बुलाता है। प्रार्थना में एक इमाम लोगों की अगवानी करता है। इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार जो व्यक्ति धनी होता है उसे गरीबों को दान (धन) ज़रूर करना चाहिए। पवित्र रमज़ान के महीने में वयस्क मुसलमान को सूर्य उदय से सूर्यास्त तक व्रत (बिना भोजन और पानी के) ज़रूर करना चाहिए। प्रत्येक मुसलमान को जीवन में एक बार हज या पवित्र शहर मक्का की यात्रा ज़रूर करनी चाहिए। मुसलमानों को नशीले पदार्थों, सुअर के माँस और जुए से दूर रहना होता है।

अरब के व्यापारियों द्वारा इस्लाम भारत में आया। इसके बाद तुर्की आए जिन्होंने भारत में अपनी सल्तनत (राज्य) स्थापित की। सन् 1526 में भारत में मुग़ल शासन की स्थापना हुई। अत: संक्षेप में इसी राजनीतिक प्रक्रिया ने भारतीय उपमहाद्वीप के प्रांतों में इस्लाम और भारत-इस्लामी संस्कृति के प्रसार का नया मार्ग खोला।

भारत में सूफ़ियों ने भारत-इस्लाम संस्कृति और धरोहरों का एक महत्वपूर्ण पहलू सामने लाने में भूमिका निभाई है। सूफ़ी सर्वत्र शांति और भाईचारे में विश्वास रखते थे। उनके रहने के स्थान को दरगाह और खानकाह के नाम से जाना जाता है। भिन्न-भिन्न प्रकार के यात्री उनकी खानकाह में ठहरा करते थे। खानकाह के लोग उनके आराम और सत्कार का ध्यान रखा करते थे। आज भी हज़ारों लोग, विशेषकर सूफ़ी शेख़ की पुण्यतिथि के अवसरों पर उनकी खानकाह में जाते हैं। यह घरेलू तीर्थस्थल पर्यटन का महत्वपूर्ण भाग है।

दरगाह कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी (दिल्ली) की दरगाह दिल्ली के गाँव महरौली में स्थित है। यहाँ पूरे वर्ष अलग-अलग धर्मों के श्रद्धालुओं की भीड़ रहती है। कुछ श्रद्धालु संत की कब्र के पास धागा बाँधते हैं और अपनी इच्छा पूरी होने पर ही उसे खोलते हैं। कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी का पवित्र स्थान शरद ऋतु में वार्षिक फूलवालों की सैर (फूल विक्रेताओं का उत्सव) का स्थान अब अनेक धर्मों के लोगों का आस्था का एक महत्वपूर्ण उत्सव बन चुका है और दिल्ली में अंग्रेज़ों के खिलाफ राष्ट्रीय आंदोलन का प्रतीक बन चुका है। सन् 1812 में इस उत्सव की शुरुआत तब हुई जब मुगल बादशाह अकबर -II (1808-1837) की पत्नी रानी मुमताज़ महल ने अपने बेटे मिर्ज़ा जहाँगीर, जिसे अंग्रेज़ों द्वारा निष्कासित करने पर इलाहाबाद भेज दिया गया था, के सुरक्षित लौटने पर फूलों की चादर और पंखा दरगाह तथा योगमाया मंदिर, महरौली में भेंट करने का संकल्प लिया था। यह माना जाता है कि दिल्ली के लोग जाति और संप्रदाय की परवाह किए बिना इस मेले में शामिल हुआ करते थे। हिंदू-मुस्लिम एकता को देखते हुए अंग्रेज़ी सरकार ने 1942 में इस उत्सव पर रोक लगा दी थी। परंतु 1961 में प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री जवाहर लाल नेहरू ने इसे पुन: शुरु किया।

हज़रत बल (कश्मीर) धार्मिक लोगों के साथ-साथ उन धर्मनिरपेक्ष पर्यटकों के लिए जो कि इमारतों का सुंदर वास्तुशिल्प देखने की इच्छा रखते हैं, हज़रत बल अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक इमारत

है। डल झील के किनारे स्थित होने से इसकी सुंदरता विशेष रूप से बढ़ गई है। कश्मीर में बल्बाकार गुम्बद वाली यह एकमात्र मस्ज़िद है। मुस्लिम लोगों के लिए यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ पैगम्बर मोहम्मद के पवित्र केश हैं। यह पवित्र स्थान कई नामों से जाना जाता है; जिनमें हज़रतबल, असर-ए-शरीफ़, मदीनात-उस सैनी और दरगाह शरीफ़ शामिल हैं। यह कश्मीर का बहुत बड़ा पर्यटक स्थल है।

चरार-ए-शरीफ़ (कश्मीर) शेख़ नुरूद्दीन ऋषि (14वीं शताब्दी) का मक़बरा है जो श्रीनगर से 32 कि. मी. दूर चरार में स्थित है। ऋषि एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है साधु। नुरूद्दीन के बाद ऋषि शब्द का जुड़ना हिंदू-मुस्लिम संस्कृति के समन्वय को बताता है। नुरूद्दीन ऋषि के साथ लल्ला या लल द्य एक शैव संत हिंदु-मुस्लिम परंपरा और रिवाज़ों के संकीर्ण बंधनों से स्वतंत्र थे और लोगों के फायदे के लिए पेड़ लगाने में विश्वास करते थे। वे इसे अपना धर्म मानते थे। ये लोग जनता में इतने प्रसिद्ध हुए कि कश्मीर की धरोहर शेख़ नुरूद्दीन और लल द्य के पदों में इस प्रकार प्रदर्शित हुई-

हम एक ही माता-पिता की संतान हैं,

तब क्यों हमें एक दूसरे से भिन्न होना चाहिए,

हिंदु और मुसलमानों (दोनों को एकसाथ मिलकर) को अकेले-अकेले ईश्वर से प्यार करने दो,

हम इस संसार में साझेदार की तरह आते हैं,

हमें अपने सुखों और दुखों को आपस में बाँटना चाहिए।

शेख़ गेसु दराज़ एक चिश्ती संत थे जिन्होंने 13वी शताब्दी में मैसूर के गुलबर्ग में ख़ानकाह की स्थापना की। गेसू दराज को 'ख्वाज़ा बंदा नवाज़' के नाम से भी जाना जाता है। 'बंदा नवाज़' की उपाधि शेख़ मोइनुद्दीन चिश्ती की उपाधि 'गरीब नवाज़' के समान है। उनकी दरगाह तीर्थयात्रा का प्रसिद्ध स्थान है और भारत-अरबी वास्तुशिल्प की शैली में बनाई गई है। इसकी दीवारों और गुम्बदों पर ईरानी और तुर्की चित्रकारी भी की गई है।

पाठगत प्रश्न 10.2

1. इस्लाम भारत में कैसे आया?
2. इस्लाम के पाँच स्तम्भ कौन से हैं?
3. मुसलमानों के मुख्य त्योहारों की सूची बनाओ?

क्रियाकलाप 10.2

किसी इस्लामी धरोहर स्थल पर जाइए और अपने अवलोकन के आधार पर रिपोर्ट लिखिए कि मस्ज़िद में प्रार्थना किस तरह की जाती है?

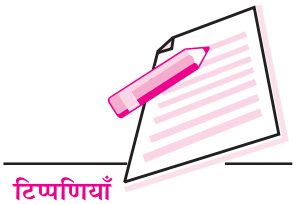

10.4 दरगाह - पर्यटकों का आकर्षण

दरगाह किसी प्रतिष्ठित धार्मिक व्यक्ति - प्राय: सूफ़ी संत या दरवेश की कब्र पर बनाया गया सूफ़ी तीर्थ होता है। मुस्लिम अपनी तीर्थयात्रा में इस पवित्र स्थान पर जाते हैं, जिसे ज़ियारत के नाम से जाना जाता है। दरगाहें अकसर सूफ़ी संतों के बैठने, रहने के स्थान से जुड़ी होती है, जिन्हें ख़ानकाह या आश्रम कहते हैं। इसमें मस्ज़िद, बैठक, इस्लामी धार्मिक विद्यालय (मदरसे) अध्यापक या प्रभारी के लिए निवास स्थान होते हैं। दरगाह फ़ारसी से लिया गया शब्द है, जिसका अर्थ 'प्रवेशमार्ग' या 'द्वार' है। कुछ सूफ़ियों और अन्य मुस्लिम लोगों का मानना है कि दरगाह वह द्वार है जिसके माध्यम से वे मृत संत के लिए हिमायत और आशीर्वाद (तसव्वुफ़) पाने के लिए आह्वान कर सकते हैं। कुछ अन्य लोग दरगाहों के लिए इतने ऊँचे विचार नहीं रखते हैं और इन दरगाहों पर केवल इसलिए जाते हैं कि वे एक धार्मिक व्यक्ति को श्रद्धांजलि दे सकें या इस जगह पर प्रार्थना करके कथित आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर सकें।

प्राय: उर्स के अवसर पर श्रद्धालुओं की उपस्थिति में इन धार्मिक स्थलों पर दरवेशों और शेख़ों के सामने संगीतमय प्रस्तुतियाँ होती हैं। इन्होंने कव्वाली और काफी जैसी शैलियों को प्रोत्साहित किया है, जिसमें सूफ़ी शायरी को संगीतबद्ध करके सूफ़ी आध्यात्मिक प्रशिक्षक-मुर्शिद के समक्ष पेश की जाती है।

इस प्रकार धर्म और संस्कृति की भिन्नताओं के बावजूद दरगाहें पर्यटकों के लिए आर्कषण की स्वाभाविक केंद्र बन जाती हैं।

संसार के हर भाग से लोग धर्म, जाति, पंथ की परवाह किए बिना दरगाहों पर आते हैं और संतों के आशीर्वाद से अपनी इच्छाओं की पूर्ति की प्रार्थना करते हैं। भारत हज़ारों दरगाहों का घर माना जाता है। इस पाठ में ऐसी दरगाहों का वर्णन किया गया है, जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है।

10.4.1 भारत की अत्यधिक प्रसिद्ध दरगाहें

पीर हाज़ी अली शाह बुखारी, मुंबई: हाज़ी अली दरगाह मुंबई के सबसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित स्थलों में से एक है जोकि अरब सागर के बीच में स्थित है।

चित्र 10.2: पीर हाज़ी अली शाह बुखारी दरगाह

पीर हाज़ी अली शाह बुखारी की उर्स (पुण्यतिथि) रबी-उल-आखिर की 16वीं रबी-उल-थानी की (17वीं शब) को मानी गई है। इसके उद्देश्यों के अनुसार सभी आवश्यक संस्कार इस्लामी परंपराओं के अनुरूप किए जाते हैं और नियाज़ (भोजन/मिठाई) को सभी श्रद्धालुओं, फ़कीरों और आगंतुकों में बाँटा जाता है।

पीर हाज़ी अली शाह बुखारी की उर्स की याद में नमाज-ए-ईशा (17 शब) के बाद हर इस्लामी महीने की सोहलवीं तिथि को एक विशेष कार्यक्रम 'मिलाद' और प्रार्थनाएँ की जाती हैं। ट्रस्ट सभी उपस्थित लोगों को नियाज़ बाँटती है।

हज़रत शेख़ अलाउद्दीन अली अहमद की दरगाह को साबीर दरगाह, कलीयार, रूड़की (उत्तराखंड) के नाम से जाना जाता है : हज़रत शेख़ अलाउद्दीन साबीर कलियारी की दरगाह रूड़की, हरिद्वार में स्थित है। वह हिंदू मुसलमान दोनों के लिए पूजनीय संत थे। लगभग 800 वर्षों से यह दरगाह अस्तित्व में है जहाँ हर वर्ष कलीयार में लाखों लोगों द्वारा उनका उर्स मनाया जाता है।

ख़्वाज़ा मोइन-उ-द्दीन चिश्ती अजमेर : दरगाह शरीफ़ अजमेर शहर के मध्य में स्थित है और देश के हर भाग से यहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है। अक्टूबर से मार्च महीने के बीच इस दरगाह पर जाने का सबसे अच्छा समय माना जाता है जब राजस्थान में मौसम ठंडा होता है। दरगाह में वार्षिक उर्स मेला इस नगर का सबसे प्रसिद्ध उत्सव है जो संसार के कोने-कोने से हज़ारों तीर्थ यात्रियों को आकर्षित करता है। यह वह अवसर है जब दरगाह को सबसे सुंदर ढंग से सजाया जाता है और सारा वातावरण उत्सव में बदल जाता है।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया दरगाह, दिल्ली : यहाँ प्रत्येक वर्ष उस सूफ़ी संत का उर्स मनाया जाता है जिनका सूफ़ीवाद रहस्यवादी नहीं था। यही एक कारण है कि आम जनता उन्हें तबसे आज तक ईश्वर का प्रिय कहती है। शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा, प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो, प्रसिद्ध इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बरनी (14वीं शताब्दी) की कब्रें और सम्राट हुमायूँ और उनके पुत्र सम्राट अकबर के प्रिय इनायत ख़ान का मकबरा प्रसिद्ध मकबरे हैं।

चित्र 10.3: निज़ामुद्दीन दरगाह

निज़ामुद्दीन दरगाह संध्या के समय, विशेष रूप से गुरुवार के दिन होने वाली नमाज़ के लिए प्रसिद्ध है। संगीतप्रेमी यहाँ कव्वालियों के लिए तथा ईद के उत्सव व हज़रत निज़ामुद्दीन के उर्स को मनाने के लिए एकत्रित होते हैं।

तमिलनाडु में नगोरे स्थित हज़रत सैयद हामिद क़ादिर वली की दरगाह विश्वभर में मुसलमानों का सुप्रसिद्ध केंद्र है।

चित्र 10.4: हज़रत सैयद हामिद क़ादिर वली की दरगाह

यह 500 वर्षों से भी अधिक प्राचीन है और इसके शीर्ष पर सोने का गुंबद है और इसके निकट पाँच मीनारें हैं। पाँच एकड़ की यह प्रसिद्ध दरगाह 16वीं सदी के संत नगोरे अंदावर को समर्पित है जो एक तीर्थकेंद्र के रूप में मानी जाती है। संत को समर्पित कंदूरी उर्स का 14वां दिन जिसे कंदूरी या कंधूरी उत्सव कहा जाता है, यहाँ हर वर्ष मनाया जाता है।

भारत में सुप्रसिद्ध दरगाहें

यहाँ कुछ प्रसिद्ध दरगाहों की सूची दी गई है । आप कुछ अन्य दरगाहों के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं–

1. कुतबुद्दीन बख़्तियार की दरगाह
2. सलीम चिश्ती का मक़बरा
3. इरवाड़ी दरगाह
4. शेख़ चिराग़ दिल्ली की दरगाह
5. करसेरी
6. कट्टूपल्ली
7. काज़ीमार बड़ी मस्जिद
8. मदुरै मक़बरा

9. मनामदुरै मक़बरा
10. मीसल किलावनेरी
11. मेहर अली शाह
12. मेलाक्कल दरगाह
13. मुथुपेट दरगाह
14. पल्लीचंदाई सिलाईमान
15. पीर मोहम्मद दरगाह
16. पिरन कलियार शरीफ़
17. सुंदरामुदायन
18. थाचूरानी
19. तिरुपराकंद्रम
20. तिरुवेदागम
21. वइप्पर
22. वलिनोक्कम
23. चरार-ए-शरीफ़

10.5 ईसाई धर्म और इसकी आधारभूत शिक्षाएँ

संसार के महान धर्मों में से एक धर्म ईसाई धर्म है। यह ईसा मसीह की शिक्षाओं पर आधारित है। लगभग 2000 वर्ष पूर्व ईसा मसीह भूमध्य सागर के पूर्वी छोर के फ़िलिस्तीन क्षेत्र (जो अब जोर्डन और इज़राइल का हिस्सा है) में रहते थे। उन्होंने अपना जीवन गरीबी और अपमान के साथ बिताया। ईसा मसीह ने पैदल यात्राएँ कर लोगों को उपदेश दिया कि मानव को ईश्वर से और एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। बहुत से लोगों ने उनकी शिक्षाओं को माना लेकिन कुछ अन्य ने उन्हें गलत समझा।

अपने अनुयायियों में से ईसा मसीह ने 12 लोगों को अपना प्रचारक चुना। उनके अनुसार ईसा मसीह अपने निधन के तीन दिन बाद दोबारा जीवित हुए थे। तब वह स्वर्ग जाने से पहले 40 दिन तक पृथ्वी पर ठहरे थे। उनके प्रचारकों ने उनकी शिक्षाओं का प्रसार करने के लिए प्रस्थान किया। उनके प्रचारकों में से सबसे प्रसिद्ध संत पीटर और संत पॉल थे, जिन्होंने बहुत से ईसाई गिरजाघरों की स्थापना की। यीशू के जीवन के बारे में उनकी कहानियाँ बाइबल के न्यू टेस्टामेंट में लिखी गई हैं। प्रारंभिक ईसाई यहूदी थे लेकिन 381 ईसवी में ईसाई धर्म और यहूदी विभाजित हो गए।

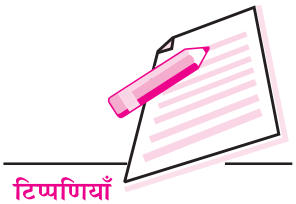

यीशू के अनुयायियों ने 'ग्रीको-रोमन भूभाग' के विभिन्न भागों में यात्राएँ कर बहुत से ईसाई गिरजाघरों की स्थापना की। यह माना जाता है कि यीशू के अनुयायियों में से एक संत थॉमस ने भारत की यात्रा की और मुज़िरिस (पश्चिमी तट) पहुँचे। उन्होंने गिरजाघरों की स्थापना की और भारत में उनके अनुयायी संत थॉमस ईसाई के नाम से जाने जाते हैं।

14वीं शताब्दी के दौरान पुर्तगालियों के भारत आगमन ने ईसाई धर्म के इतिहास में एक नया मार्ग खोला जिसके फलस्वरूप उन्होंने भारत के पश्चिमी तट पर गिरजाघरों की स्थापना की। यह वह समय था जब पुर्तगाली ईसाई मिशन के तहत एक कैथोलिक पादरी फ्रांसिस ज़ेवियर (1506–52) को भारत भेजा गया था। वह पश्चिमी तट पर बहुत से लोगों को ईसाई बनाने में सफल हुआ। बादशाह अकबर ने ईसाई मिशन को अपने गिरजाघर बनाने, अपने धर्म का प्रचार करने और अपने धार्मिक उत्सव मनाने की स्वतंत्रता दी थी।

10.5.1 भारत में ईसाई संस्कृति

ईसाइयों के पूजास्थल को गिरजाघर कहते हैं। ये प्राय: क्रास के आकार में बनाए जाते हैं जिनमें अल्तार (बलिवेदी) सूर्योदय के सामने पूर्व दिशा में होता है। ईसाई आध्यात्मिक नेताओं को पादरी या मिनिस्टर कहा जाता है। ईसाइयों का मानना है कि पादरियों का ईश्वर से विशेष संबंध होता है। बाइबल ईसाइयों की पवित्र पुस्तक है।

ईसाई परंपरा और उत्सव

'ईसाई उपदेशक इस बात को महत्व देते हैं कि मनुष्य की आत्मा का सार प्रेम है और प्रेम का स्रोत ईश्वर है।'

10.6 भारत में ईसाई धरोहर-स्थल

भारत में ईसाई धर्म की बहुत-सी धरोहरें स्थित हैं, जिनमें से आप कुछ प्रसिद्ध धरोहरों के बारे में यहाँ पढ़ेंगे।

सेंट थॉमस माउंट – चेन्नै के दक्षिण पश्चिम में पाँच किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहाँ संत थॉमस को दफनाया गया था। इस पहाड़ी को उनके नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि समतल मैदान से 100 मीटर ऊँची एक वीरान पहाड़ी पर थॉमस को मारा गया था। 1547 में पुर्तगालियों ने इसे प्राचीन नेस्टोरियन चर्च की जगह पर बनाया था, जहाँ माइलापोर कैथेड्रल की नींव रखी गई थी। यह माना जाता है कि पत्थर पर क्रॉस को संत थॉमस द्वारा तराशा गया था और इसी तरह के क्रॉस केरल में भी पाए जाते हैं जहाँ उनके सात धार्मिक स्थल बनाए गए, जो सभी आज शोभायमान हैं। परंपरानुसार क्रॉस को सबसे पहले सार्वजनिक रूप से 18 अगस्त, 1558 में निकाला गया फिर इसके बाद एक अंतराल तक इसे 1704 तक निकाला जाता रहा। यह ईसाइयों के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण धार्मिक पर्यटक स्थल है।

बेसिलिका ऑफ बॉम जीसस, प्राचीन गोवा भारत और विदेश से गोवा आने वाले पर्यटकों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध स्थान है। यह 1605 में बनाया गया था और अब इसे विश्व धरोहर घोषित कर दिया गया है। इस गिरजाघर में गोवा के संरक्षक संत, संत फ्रांसिस ज़ेवियर के पवित्र अवशेष रखे हुए हैं, जिनकी मृत्यु 2 दिसम्बर, 1552 में चीन जाते हुए एक समुद्री यात्रा के दौरान हुई थी। उनकी इच्छानुसार जब अगले वर्ष उनके शव को गोवा हस्तांतरित किया गया तो पाया कि संत का शव उतना ही निर्मल था जितना कि उस दिन जब उन्हें दफ़नाया गया था। यह चमत्कारी घटना हर स्थान के श्रद्धालुओं को निरंतर आकर्षित कर रही है और हर दस वर्षों में उनके शव के सार्वजनिक दर्शन के लिए विश्वभर से लाखों श्रद्धालु आते हैं।

सेंट कैथेड्रल, गोवा धार्मिक और धर्म निरपेक्ष पर्यटकों के लिए एक अन्य महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध स्थान है। उनके भक्त कैथेड्रल में रखे क्रॉस के चमत्कारों को सुनकर स्तब्ध रह जाते हैं। लोगों ने उस क्रॉस और चट्टान पर ईसा मसीह के दर्शन का अनुभव किया है, जहाँ पर इस गिरजाघर को पाया गया था।

सेंट फ्रांसिस ऑफ असीसी का बेहद सुंदर सफ़ेद चर्च आज एक पुरातत्व संग्रहालय का रूप ले चुका है। यहाँ आदिवासियों की ऐतिहासिक वस्तुओं को दर्शाया गया है। आरंभ के दिनों में इसे 'पर्ल ऑफ द ओरिएंट' या 'रोम ऑफ द ईस्ट' के नाम से भी जाना जाता था। यह भव्य चर्चों का केंद्र, प्रबल विजयी उपस्थिति का प्रतीक था जो अपने अंतिम उपनाम को सिद्ध करता है। वास्तव में, 1651 में इटली के वास्तुकार द्वारा निर्मित संत कजेतन के चर्च को संत पीटर के वास्लीकेन रोम में लघु रूप दिया गया था। आज यहाँ एक धार्मिक विद्यालय है।

प्रेसबेटेरियन चर्च (रॉस द्वीप, अंडमान) प्रोटैस्टेंट (ईसाई धर्म की एक शाखा) चर्च पत्थरों से निर्मित है और इसकी खिड़कियाँ बर्मा की सागोन लकड़ी से बनी हुई हैं। अल्तार (गिरजाघरों में वह रखी जाने वाला वह मेज़ जिस पर पूजा की सामग्री रखी जाती है) के पीछे इटली के रंगीन सुंदर ढंग से उकेरे हुए काँच लगे हैं। लकड़ी की गुणवत्ता इतनी अच्छी है कि यह सौ वर्षों से भी अधिक समय से हर प्रकार के मौसम में भी सुरक्षित बनी हुई है। चर्च के दक्षिण में पादरी के रहने के लिए एक एक छोटा सा स्थान बनाया गया है।

थॉमस चर्च कोदुनाल्लूर केरल में स्थित भारत का पहला कैथोलिक गिरजाघर है। यह थॉमस द्वारा निर्मित 7 प्रमुख गिरजाघरों में से एक है और दक्षिण भारत में सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

सेन थॉमस बेसिलिका सोलहवीं शताब्दी का यह गिरजाघर चेन्नै सैन्थोम में स्थित है। इस भारतीय चर्च में चारों ओर लगा हुआ सुंदर रंगीन काँच संत थॉमस के जीवन के विभिन्न चरणों की महिमा और गौरव को प्रदर्शित करता है और यहाँ पर बनी मदर मेरी की प्रतिमा यहाँ की श्रेष्ठतम कृति मानी जाती है। **वेलनकन्नी** तमिलनाडु का सर्वाधिक प्रसिद्ध गिरजाघर है। पोप (रोम का बड़ा पादरी) ने स्वयं इस गिरजाघर को एक पवित्र नगर के रूप में माना है। यहाँ विश्व भर से सबसे अधिक संख्या में ईसाई दर्शन करने आते हैं।

होली क्राइस्ट चर्च उत्तर भारत के सबसे उल्लेखनीय गिरजाघरों में से एक है। यह सबसे प्रसिद्ध गिरजाघर है। यह पीले रंग का गिरजाघर शिमला में रिज़ मैदान पर स्थित है। यह भारतीय फ़िल्मों का प्रसिद्ध शूटिंग का स्थान भी माना जाता है।

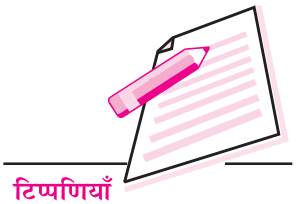

सेंट जॉन चर्च उत्तर भारत का सबसे पुराना कैथेड्रल चर्च है। यह प्रसिद्ध 'मानसिक शांति स्थल' से पाँच किलोमीटर दूर मैकलॉडगंज में स्थित है। इसका निर्माण सन् 1852 के आसपास हुआ था। इस चर्च में आने से पूर्ण शुद्धता का एहसास होता है। इसके चारों ओर देवदार के पेड़ हैं और यह बहुत ही सुंदर प्राकृतिक वातावरण में बना हुआ है।

सेंट जेम्स चर्च या स्कीनर चर्च, दिल्ली – यह दिल्ली के प्राचीनतम गिरजाघरों में से एक है जिसे सन् 1836 में कर्नल जेम्स स्कीनर ने कश्मीरी गेट के पास निर्मित किया था। जेम्स स्कीनर के पिता हरक्यूलस भारतीय-ब्रिटिश सेना में थे। उन्होंने एक राजपूत महिला से विवाह किया था। स्कीनर युद्ध में बुरी तरह घायल हो गए परंतु उनकी जान बच गई। उन्हें गिरजाघर बनवाने के संकल्प के लिए जाना जाता है। इस चर्च की मूल बनावट पुनर्जागरण शैली से संबंधित है, जहाँ तीन बरामदे, सुंदर रंगीन काँच की खिड़कियाँ और मध्य में अष्टभुजाकार गुंबद निर्मित है।

सरधना चर्च मेरठ से 19 किलो मीटर दूर स्थित है। यह इसलिए प्रसिद्ध है, क्योंकि इसे बेगम समरू द्वारा निर्मित किया गया था। समरू जर्मन था, जो बंगाल के नवाब सिराजुनैला और रूहेलखंड के नज़फ खान का सेवक था। उसने एक भारतीय महिला जेबुन्निसा से विवाह किया था, जो बेगम समरु के नाम से लोकप्रिय थीं।उन्होंने रोमन कैथलिक धर्म को अपना लिया। अपने पति की मृत्यु के पश्चात उन्होंने यूरोपीय सेना दल का भली-भाँति नेतृत्व किया, जिसके चलते वे अंग्रेज़ों के संपर्क में आईं। वर्तमान समय में चाँदनी चौक स्थित लाला लाजपत राय बाज़ार उनका निवास स्थान था। सरधना में एक सुंदर चर्च का निर्माण करने के लिए भी इनको जाना जाता है। इस चर्च के वास्तु, सौंदर्य और बेहतरीन प्रबंधन के कारण यूनेस्को ने इसे धरोहर-स्थल की मान्यता प्रदान की है। वर्ष में दो बार मार्च और नवंबर माह में हज़ारों धार्मिक पर्यटक मदर मैरी और बेगम समरू को श्रद्धांजलि देने यहाँ आते हैं।

कोहरन थियांगलिम, आइजॉल (मिज़ोरम) उत्तर भारत में मिजोरम की राजधानी आइजॉल में एक समूह (जो स्वयं को 'कोहहरान थियांगलिम' कहता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'पवित्र गिरजाघर') ने एक भव्य संरचना का निर्माण किया जिसे 'सुलेमानी मंदिर' कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि डॉ. एल. बी. सालियो को इस धार्मिक स्थल का निर्माण करने के लिए किसी पवित्र आत्मा द्वारा कहा गया था। उन्होंने बिलकुल उसी तरह का निर्माण कराया, जैसा कि उनसे कहा गया था। इसकी सरंचना, माप, ऊँचाई, आकृति, दरवाज़ों और खिड़कियों की संख्या आदि का जो भी विवरण उस पवित्र आत्मा ने उन्हें दिया, वैसा ही इसे बनवाया गया। इस स्थान का क्षेत्रफल 32400 वर्ग मीटर है। इसे इस तरह निर्मित किया गया है कि यह आंधी और भूकंप आदि विपदाओं से सुरक्षित है। आकाश से देखने पर इसकी आकृति क्रॉस की तरह दिखाई देती है।

भारत में अन्य ईसाई धरोहर स्थल

उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद में स्थित सन् 1870 में बना एंगलीकन कैथेड्रल जो बाहर से लाल और सफ़ेद पत्थरों का बना है और जहाँ पर संगमरमर की सुंदर अल्तार (चर्च में रखा जाने वाला वह मेज़ जहाँ पूजा-सामग्री रखी जाती है।) है, एक अन्य दार्शनिक एवं आध्यात्मिक स्थल माना जाता है।

दिल्ली में देखने योग्य चर्चों में सम्मिलित हैं – सेकरेड हार्ट चर्च और केथेड्रल चर्च ऑफ रिडम्पशन। मुंबई का पहला एंगलीकन चर्च है-सेंट थॉमस का कैथेड्रल चर्च, जो कि धार्मिक पर्यटकों के लिए

एक महत्वपूर्ण स्थल है। **हिमाचल प्रदेश** में आए पर्यटकों के लिए देखने योग्य महत्वपूर्ण गिरजाघर हैं- क्राईस्ट चर्च और सेंट माइकल का कैथेड्रल, सेंट फ्रांसिस का कैथोलिक चर्च, सेंट जॉन चर्च-इन-वाइल्डरनेस और क्राईस्ट चर्च।

पाठगत प्रश्न 10.3

1 भारत में ईसाई धर्म कैसे आया?

2 भारत के दो प्रमुख गिरजाघरों के नाम लिखिए।

क्रियाकलाप 10.3

- किसी ईसाई धरोहर-स्थल पर जाएँ और उसका अवलोकन करने के बाद एक रिपोर्ट लिखिए।
- भारत के नक्शे पर ईसाई धरोहरों की पहचान कीजिए।
- किसी ईसाई परिवार से मिलिए और उनकी संस्कृति पर चर्चा कीजिए तथा उस पर एक रिपोर्ट लिखिए।

आपने क्या सीखा

- सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक का जन्म 146उत्तर9 में पाकिस्तान में लाहौर के निकट तलवंडी में हुआ था। वे भक्ति आंदोलन के महानतम संतों में से एक थे। 'सिख' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'शिष्य' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है अनुयायी।
- सिखों के पूजा के स्थान को 'तख़्त' के नाम से जाना जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'दिव्य शक्ति की गद्दी' और गुरुद्वारा का अर्थ है 'गुरु का द्वार'। भारत में कई गुरुद्वारे हैं परन्तु तख़्त केवल पाँच हैं।
- इस्लाम एकेश्वरवादी धर्म है। 'इस्लाम' का शाब्दिक अर्थ है- 'शांति एवं आत्मसमर्पण'। धर्म के रूप में इस्लाम, सन् 570 में मक्का में हज़रत मोहम्मद द्वारा स्थापित किया गया था।
- दरगाह वह सूफ़ी तीर्थ है, जिसे किसी धार्मिक व्यक्ति - प्राय: सूफ़ी संत या दरवेश की कब्र पर बनाया जाता है।
- ईसाई धर्म को विश्व के महान धर्मों में से एक माना जाता है। यह ईसा मसीह की शिक्षाओं पर आधारित है।

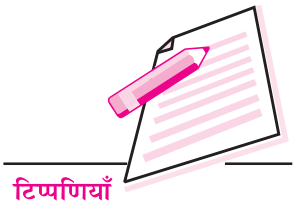

पाठांत अभ्यास

1. सिख धर्म की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।
2. सिख धरोहरों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
3. इस्लामी संस्कृति की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।
4. भारत में पर्यटकों के लिए देखने योग्य सर्वाधिक प्रसिद्ध इस्लामी धरोहरों का वर्णन कीजिए।
5. भारत में ईसाई संस्कृति और परंपराओं की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।
6. भारत की किन्हीं पाँच सुप्रसिद्ध और भव्य ईसाई धरोहरों का वर्णन कीजिए।

पाठगत के प्रश्नों के उत्तर

10.1

1. गुरु नानक देव, गुरु अंगद, गुरु राम दास, गुरु अर्जन देव, गुरु हरगोविंद, गुरु हर राय, गुरु हरकिशन, गुरु तेग बहादुर और गुरु गोविंद सिंह।
2. 'गुरुग्रंथ साहिब' सिखों की पवित्र पुस्तक है।
3. तख़्तों को वहाँ स्थापित किया गया है जहाँ गुरुओं द्वारा विभिन्न सामाजिक और राजनैतिक समाधान किए गए थे।
4. कंघा, केश, कड़ा, कच्छा, कृपाण।
5. लंगर नि:शुल्क भोजन है।

10.2

1. भारत में इस्लाम अरब उपद्वीप के व्यापारियों द्वारा लाया गया था।
2. (क) पाँच बार नमाज़ (ख) जकात यानी गरीबों को दान करना (ग) रमज़ान के माह में रोज़े रखना (घ) मक्का की तीर्थयात्रा करना और एक निराकार ईश्वर में यानी अल्लाह पर आस्था रखना।
3. ईद-उल-फ़ितर, ईद-उल जुहा, मोहर्रम, ईद मिलाद उन-नबी।

10.3

1. व्यापारियों द्वारा।
2. (क) प्राचीन गोवा में ईसा मसीह की बेसिलिका।

   (ख) चेन्नै में सेंट थॉमस माउंट।